वन उत्पादकता संस्थान,रांची

बांस पौधशाला एवं प्रबंधन पर साप्ताहिक प्रशिक्षण

04.02.2019 – 08.02.2019

वन उत्पादकता संस्थान रांची के तत्वाधान में बांस तकनीक सहायता समुह (BTSG) एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् (ICFRE) द्वारा वित् पोषित "बांस पौधशाला एवं प्रबंधन" विषय पर वन उत्पादकता संस्थान रांची द्वारा दिनांक 04.02.19 से 08.02.19 तक प्रशिक्षण आयोजित किया गया| प्रशिक्षण कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन संस्थान के निदेशक द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया| इस अवसर पर संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान) तकनीक अधिकारीगण उपस्थित रहे| इस अवसर पर प्रशिक्षण पुस्तिका "बांस पौधशाला एवं प्रबंधन" का विमोचन भी किया गया|

इस प्रशिक्षण में झारखण्ड एवं ओड़िसा राज्य के वन विभाग के वनपाल, वनरक्षक एवं रांची जिले के ग्रामीणों की प्रतिभागिता रही| पांच दिनों तक चलनें वाले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के समुह समन्वयक अनुसंधान एवं पाठ्यक्रम समन्वयक डा. योगेश्वर मिश्रा द्वारा प्रतिभागियों को प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रदान किया गया जिसमें बांस का भौगोलिक वितरण , बांस पौधशाला की स्थापना एवं इसमे लगने वाले रोग, रोग नियंत्रण, बांस रोपणी में VAM की भूमिका, टिशु कलचर द्वारा बांस का उत्पादन, बांस की व्यवसायिक खेती, खाद्य एवं सौंदर्य प्रसाधन के रूप में बांस के उपयोग बांस में होनेवाले पुष्पन तथा पुष्पन के बाद की तैयारी, बांस में आनुवंशिक सुधार बांस की परिरक्षण तकनीक, बांस की खेती के लिए मिट्टी और पोषण की आवश्यकता, बांस आधारित कृषि वानिकी की सम्भावनाएं इत्यादि विषयों पर विस्तृत तकनीकी जानकारी दी गई| इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रूबी एस. कुजुर वैज्ञानिक सी. ने किया|

पहले दिन : संस्थान के समुह समन्वयक अनुसंधान डा. योगेश्वर मिश्रा ने विश्व एवं भारत में बांस कितने प्रकार के होते हैं एवं उनका पहचान के तरीके एवं बांस पौधशाला के तकनीक तथा पौधशाला के प्रबंधन के बारे में भी अवगत कराया| डा.पी.के.दास ने बांस के लिय उपयुक्त मिट्टी एवं कौन सी उर्वरक कितनी मात्रा में एवं कब मिलाएं इस पर प्रतिभागियों से चर्चा की| वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. संजय सिंह ने बांस प्रबंधन के तकनीक एवं बांस के संरक्षण कैसे किया जाये इस विषय पर चर्चा की| भोजनावकाश के वाद सत्र में प्रशिक्षणार्थियों को संस्थान में स्थित बैम्बू सिटम का भ्रमण कराया गया तथा विभिन्न बांस प्रजातियों के पहचान से उनको अवगत कराया गया|

दुसरे दिन : बांस रोग विशेषज्ञ डा. के.के.सोनी ने बांस पौधशाला एवं बांस बखार में लगने वाले रोग एवं उसका नियंत्रण विषय पर चर्चा की साथ ही साथ इन्होने वाम (VAM) के जैव उर्वरक के रूप में उपयोग पर भी व्यख्यान दिया| डा. के.के.सोनी नें विभिन्न बांस प्रजातियों की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए (VAM) के प्रयोग पर बल दिया| उन्होंने वताया कि किस तरह (VAM) का प्रजातिवार उत्पादन किया जा सकता है जो कि उनके खाद्य सामग्री की अतिरिक्त आवश्यकताओं की आपूर्ति करता है| डा. योगेश्वर मिश्रा, श्री सतीश कुमार एवं श्री महेश कुमार ने प्रतिभागियों को बांस के उत्पादन हेतु वर्धी प्रजनन की विधियों के वारे में विस्तार से क्षेत्र में प्रायोगिक कार्य कराया| जिसमें प्रतिभागियों से ही Single, double तथा whole cutting तैयार कर संस्थान के Mist chamber में रोपित कराया गया| राइजोम द्वारा चुने गये भिर्रों का कायिक प्रजनन विधि द्वारा प्रतिस्थापन पर विस्तृत एवं प्रयोगों के दौरान Stock Solution की तैयारी के बारे में भी विस्तार से बताया गया|

तीसरे दिन : समस्त प्रतिभागियों को बांस हस्तशिल्पकारी के विषय में अवगत कराने के लिए ओरमांझी स्थित बांस शिल्पकार श्री महाबीर महली के हस्तशिल्प केंद्र का भ्रमण कराया गया जिसमें बांस से बनने वाले विभिन्न वस्तुओं के बारे में जानकारी दी गयी| कौन सी बांस की प्रजाति किस सामग्री के निर्माण में उपयुक्त होती है इसकी भी जानकारी भी प्रतिभागियों को दी गई| इन्होने कहा कि करीब 30 फीट बांस से हस्तशिल्प द्वारा बांस निर्मित सामग्री से लगभग 6000.00 – 8000.00 रूपये की आमदनी हो सकती है| भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों से प्रायोगिक हस्त शिल्प का कार्य भी कराया गया|

चौथे दिन : श्री सुभाष भाटिया, बांस विशेषज्ञ (Green Bamboo Nursery) जबलपुर ने प्रतिभागियों को अपनी बांस से संबंधित के उपर सफलता की कहानी (Success Story) बताई| उन्होंने कहा देश में वहुत सी बांस प्रजातियां हैं जो अधिक मूल्यवान हैं| अपनी कहानी में उन्होंने वताया की सात एकड़ जमीन से लगभग 60 लाख रूपये वार्षिक आमदनी हो जाती है| इन्होने कहा आनेवाले दिनों में बांस का व्यपार एक फर्नीचर का बृहद रूप लेनेवाला है और इनके मूल्य अधिक से अधिक मिलेंगें| श्री सुभाष भाटिया ने बांस के उपयोग, सौन्दर्य साधन तथा खाने के रूप में प्रयोग किये जाते हैं इस पर प्रकाश डाला|उन्होंने अपने पौधशाला में संकलित की गयी ४७ प्रजातियों का जिक्र किया तथा प्रजातिवार इनके पहचान एवं उपयोगों पर चर्चा की| अपने प्रस्तुतीकरण के दौरान उन्होंने चीन द्वारा उत्पादित किये जा रहे हाइब्रिड बांस के बारे में भी बताया तथा इन चुनौतियों से निपटने के लिए भारत सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों पर भी प्रकाश डाला| संस्थान के वैज्ञानिक डा. अनिमेष सिन्हा ने उत्तक संवर्धन द्वारा बांस के

विभिन्न प्रजातियों के उत्पादन की जानकारी दी| उन्होंने विभिन्न माध्यमों में बांस के पौधे तैयार करने, उनके वहुगुणन तथा जड़ोत्पादन की विभिन्न अवस्थाओं का भी वर्णन किया| उत्तक संवर्धन तकनीक द्वारा संस्थान द्वारा उत्पादित बांस प्रजातियों तथा उनके सफलता पूर्वक Field demonstration का भी उल्लेख किया| भोजनावकाश के वाद प्रशिक्षणार्थियों को उत्तक संवर्धन प्रयोगशाला का भ्रमण कराया गया जिसमें उनके द्वारा पूछे गये प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर दिया गया

पांचवें दिन: संस्थान के वैज्ञानिक डा.संजय सिंह ने बांस पर किये जा रहे आनुवांशिक सुधार कार्यक्रम की विस्तार से चर्चा की उन्होंने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् देहरादून द्वारा शुरू किये गये बांस सुधार कार्यक्रम की विस्तृत विवेचना की| वैज्ञानिक श्री संजीव कुमार ने बांस के उन्नत भिर्रों के चयन तथा इनके प्रजनन से सबंधित विषय पर विस्तार से चर्चा की| संस्थान के वैज्ञानिक डा. योगेश्वर मिश्रा ने बांस के भिर्रों का प्रबंधन तथा उनके चयनात्मक कटाई के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा बांस के भिर्रों में होने वाले पुष्पन तथा पुष्पन के वाद की तैयारियों के वारे में जानकारी दी गयी|

कार्यक्रम के समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों को संस्थान के निदेशक द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किये गये| अपने सम्बोधन में निदेशक महोदय ने बांस तकनीक सहायता समुह (BTSG) एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् (ICFRE) देहरादून को इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के सार्थक पहल की भूरी-भूरी प्रशंसा की जिसमें वन विभाग के फिल्ड स्टाफ तथा किसानों को प्रशिक्षण द्वारा तकनीकी जानकारी प्रदान दी गई| उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन पर बल दिया| समस्त प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किया गया| कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन प्रेषित रहने के साथ हुआ| समापन समारोह का संचालन डा. योगेश्वर मिश्रा द्वारा स्वयं किया गया|

बांस पौधशाला एवं प्रबंधन

बांस पौधशाला एवं प्रबंधन
(Bamboo Nursery and Management)

बांस पौधशाला एवं प्रबंधन

उद्घाटन सत्र की झलकियाँ तथा प्रशिक्षण सामग्री का विमोचन

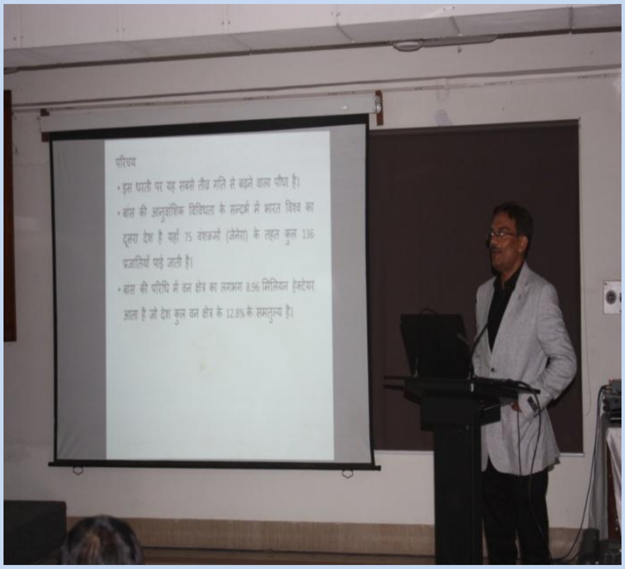

उद्घाटन सत्र की झलकियाँ

प्रशिक्षण सत्र का संस्थान के निदेशक द्वारा उद्बोधन ,प्रतिभागियों द्वारा परिचय एवं उद्घतन सत्र का Group Photography

बांस के प्रजाति विवरण के ऊपर डा. योगेश्वर मिश्रा का प्रस्तुतीकरण तथा फिल्ड में बांस की पहचान कराते विशेषज्ञ

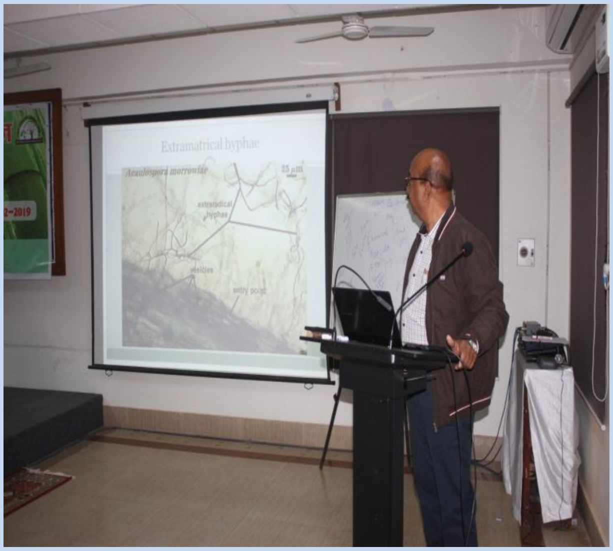

विभिन्न विषयों पर प्रस्तुतीकरण देते विशेषज्ञ

ओरमांझी स्थित बांस हस्तशिल्प केंद्र में प्रतिभागियों का भ्रमण

बांस विशेषज्ञ श्री सुभाष भाटिया द्वारा प्रस्तुतीकरण

विशेषज्ञ डा. के.के. सोनी एवं श्री सुभाष भाटिया को संस्थान के निदेशक द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट

Group photography in valediction session

-

प्रशिक्षण समाप्ति के अवसर पर प्रशिक्षनार्थियों द्वारा फीड बैक एवं प्रमाण पत्र वितरण

प्रशिक्षण समाप्ति के अवसर पर प्रशिक्षनार्थियों द्वारा फीड बैक एवं प्रमाण पत्र वितरण

संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन पर उद्बोधन तथा डा, संजय सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापन